अध्याय उनतालीसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"जिस आत्मा का श्रीविष्णु, श्रीशिवजी तथा ऋषि मुनि भक्तिभाव से ध्यान करते हैं, जिस अस्तित्व (आत्मा) का सभी देवदेवताएँ गुणगान करते हैं, जो गुरुदेव उनकी शरण में आए भक्तों की विपत्ति दूर करते हैं, जिन्होंने मन की सारी वृत्तियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण कर लिया हैं, ऐसे सिद्धनाथजी को मैं प्रणाम करता हूँ।"

श्रीसिद्धारूढ़ गुरुमाता, भक्तों पर प्रेम की छाया करती है, उनसे प्रसन्न होने के कारण ही उसने सगुण रूप धारण किया है। वह भक्तों को शुद्ध प्रेम का स्तन पान कराती है, वह दूध ही सुरस ब्रह्मानंद है जिसे पिने से सांसारिक आसक्ति जीर्ण हो जाती है और पिने वाला ब्रह्म से एकरूप हो जाता है। दयालु सतगुरुनाथजी शरणागत को स्वीकार करके उसका भव बंधन तोड़कर उसे शुद्ध ज्ञान देते हैं। लोहे को पारस का स्पर्श होने से वह सोने में परिवर्तित होता है, परंतु उस सोने से दूसरे लोहे को स्पर्श करने से वह सोने में परिवर्तित नहीं होता। परंतु सतगुरुनाथजी की करनी ऐसी नहीं होती; वे स्वयं के शिष्य को अपने समान ही परिपूर्ण बनाते हैं, उसके पश्चात वह (शिष्य) दूसरे को ब्रह्मस्वरूप प्राप्त कराता है। सतगुरुजी की किसी के साथ उपमा न कर सकने के कारण ही उन्हें "अनुपम" कहा जाता है; उनकी शरण में जाने के लिए उनके चरण दृढ़ता से पकड़ने चाहिए।

ताईबाई दाभोलकर नाम की एक महिला थी, जिसकी सतगुरुजी पर दृढ़ भक्ति थी, दिनरात वह सिद्धसतगुरुजी के ध्यान में लीन रहती थी। वह मुंबई शहर में रहती थी। एक दिन उसके घर एक साधु आया; सद्भाव के साथ उसने साधु की बहुत आवभगत की। उसने उसके बालबच्चों को बुलाकर उनसे साधु को प्रणाम करवाया, उसपर हर्षित होकर साधु ने उसे कहा, "आप की साधु संतों पर जो श्रद्धा है, उसे देखकर मैं अत्यंत संतुष्ट हुआ हूँ। सच पूछा जाए तो, आप जैसे धनवान लोगों में भक्तगणों का होना विरले ही होता है! फिर भी, मैं जो कहता हूँ वह आप ध्यान से सुनिए। भक्तों का सखा कहलवाने वाले सिद्धारूढ़ सतगुरुनाथजी हुबली में रहते हैं; वही इस पृथ्वी पर शुद्ध तथा परम पवित्र हैं।

असंख्य भक्तगण उनके पास आते हैं, उनके चरण छूकर कृतकृत्य होते हैं; भक्तों की मनोकामनाएँ वे तत्काल पूर्ण करते हैं। उनका रूप अति मनोहर है, मानो सुख तथा शांति का असीम सागर ही हो। उनके चेहरे की ओर देखते ही त्रितापों का विनाश होता है। यह देखिए उनका फोटो," ऐसा कहकर साधुने अपनी झोली से एक फोटो निकालकर उसके सामने पकड़ा। फोटो में सतगुरुजी की मनोहर छबि देखकर ताईबाई को अपार आनंद हुआ। उसने कहा, "बाबाजी, आप ही हमारे गुरु हैं जिसने हमें सच्चा भगवान दिखाया है। अब कृपा करके हमें उनके पास ले चलिए।" साधु ने कहा, "आप निकलने की तैयारी कीजिए। मैं आप के साथ आऊँगा, तब तक आप के घर ही रहूँगा।" ताई ने बड़े आदर के साथ साधु की पूजा की। दूसरे दिन हुबली जाना निर्धारित हुआ। ताई सतगुरुजी का चिंतन करने लगी| इतने में एक आश्चर्यपूर्ण घटना घटी। ध्यान समाप्त करके ताई बिछाने पर लेट गयी, सोने से पहले उसे हुबली रहने वाले सतगुरुजी का स्मरण हुआ। सोने के पश्चात ताईबाई को सपना आया। जिस प्रकार साधु ने बयान किया था, बिलकुल वैसे ही गुरुनाथजी उसने सपने में देखे। उनके चेहरे पर फैला दिव्य तेज देखकर उसकी आँखें चकाचौंध हो गयी। वह तेजस्वी रूप देखकर ताई ने झट से उनके चरण छू लिए। उसपर सतगुरुजी ने प्रेम से ताई को उठाया। उसने पूजा का सामान लाकर सतगुरुजी की पूजा की और उनकी कृपा प्राप्ति के लिए उनसे प्रार्थना की। उसने कहा, "गुरुनाथजी, इसी प्रकार मुझे प्रतिदिन आप के दर्शन हो, ऐसा वरदान आप मुझे दीजिए, इसके सिवाय मुझे अन्य कुछ भी नहीं चाहिए।" सिद्धनाथजी उस समय "तथास्तु" कहकर अंतर्धान हो गये; उस समय ताईबाई को हुआ हर्ष त्रिभुवन में भी समा नहीं सका। तड़के उठने के पश्चात सतगुरुजी की महिमा का स्मरण करके आश्चर्यित हुई ताईबाई ने सभी को उसके सपने में अवर्णनीय सिद्धारुढजी आने की घटना सुनाई। उनके प्रति उसके मन में दृढ़ भक्तिभाव होने के कारण हर पल सिद्धनाथजी उसके ध्यान में आकर उसे आनंदित कर रहे थे और यह घटना सुनकर उसके घर के अन्य सदस्य भी सिद्धनाथजी के दर्शन के लिए तड़पने लगे थे।

इसके पहले अध्याय में तुकप्पा के घर सजाए हुए मंडप में सतगुरुजी को बिठाकर उनके सामने कीर्तन चलता रहने का बयान किया गया है। ठीक उसी

समय, यह मंडली वहाँ पहुँची। मंडप में आसन पर बैठे हुए सिद्धसतगुरुजी को देखकर ताई के आनंद का कोई ठिकाना नहीं रहा, दौड़ती हुई आकर उसने सतगुरुजी के चरण पकड़ लिए। उसके हृदय में सतगुरुजी के प्रति भक्तिभाव भर आने के कारण उसकी आँखों से अविरत अश्रुपात हो रहा था; कई बार उनके चेहरे की ओर देखकर भी उसके मन की तृप्ति नहीं हो रही थी। सतगुरुजी ने ताई से पूछा की वह कहाँ से आई है। ताई ने कहा, "गुरुमहाराज, मैं मुंबई की रहने वाली हूँ तथा हम सभी आप के दर्शन के लिए पधारे हैं। स्वामीजी आप ने मुझे सपने में दर्शन देने के पश्चात, हमारे मन में आप के प्रति होने वाली उत्कंठा चरम सीमा तक पहुँचने के कारण हम तुरंत आप के दर्शन के लिए निकल पड़े।"

ताई तथा उसके परिवार के सदस्यों ने आँखे भरकर पूजा देखी; उस समय ताई ने मन ही मन कहा की सतगुरुजी ने कृपा करके ऐन पूजा के मौके पर हमें यहाँ बुला लिया। उसके पश्चात ताई तथा उसके घर के सदस्यों को साथ लेकर सिद्धनाथजी मठ आये। वहाँ कुछ दिन बहुत आनंद में बिताकर ताई फिर से मुंबई वापस लौटी। उसके पश्चात प्रतिवर्ष समारोह के समय ताईबाई घर के सभी सदस्यों के साथ मुंबई से हुबली सतगुरुजी के दर्शन के लिए आती थी। ताईबाई के तीन बेटें थे, उनमें से मँझले बेटे का नाम प्रभाकर था। प्रभाकर के नलिनी नाम की एक सुंदर बेटी थी। एकबार वे सारे सदस्य समारोह के लिए हुबली पधारने के पश्चात नलिनी को तीव्र ज्वर आया। तीन दिनों तक ज्वर बढ़ता ही गया और तीसरी रात ऐसा लग रहा था की मानो उस लडकी के प्राण निकल गए हो। ताईबाई की आज्ञा होने के कारण सतगुरुजी के चरणामृत के अलावा ज्वर के लिए अन्य किसी भी दवाई की योजना नहीं की गयी थी। जब सतगुरुजी सो रहे थे तब दुख के आवेग से रोती हुई नलिनी की माँ ने कहा, "हे सतगुरुमाता, लगता है की मेरी बेटी के प्राण निकल गये है। अब आप ही बताईए, मैं क्या करुँ? मैं आप को कैसे जगाऊँ? आप सभी के हृदय में रहते हैं, इसलिए कृपा करके जल्दी आकर मेरी बेटी को बचा लीजिए।" यह दृश्य देखकर ताई ने कहा, "हे सतगुरुनाथजी, मेरे घर के सभी सदस्य आप की शरण में आए हैं। इस कठिन समय में अगर आप ने हमारी मदद नहीं की तो आप के बाने

पर आँच आएगी। इसलिए, अब जो करना है, वह आप ही कीजिए।" इधर सतगुरुजी जहाँ सोये हुए थे, वहीं वे हड़बड़ाकर उठ गए, उन्होंने पाँव में पादुकाएँ पहन ली और जहाँ मुंबई की भक्तगण ठहरे हुए थे वे वहाँ आए। उन्हें देखते ही ताईबाई ने झट से उठकर उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और पूछा, "महाराज, आप को किस ने जगाया?" सिद्धजी ने कहा, "तुम्हारी करुण आवाज मेरे कानों तक पहुँचने के कारण मैं तेजी से यहाँ आया हूँ। चलो देख ले, कहाँ है बाला नलिनी? जल्दी दिखाओ मुझे।" ताई सिद्धारूढ़जी का हाथ पकड़कर उन्हें जहाँ नलिनी सोयी हुई थी वहाँ ले गयी। सतगुरुजी ने कृपा दृष्टि से नलिनी को ओर देखा और कहा, "आप सभी धीरज रखिए। अभी नलिनी ठीक हो जाएगी।" जब सतगुरुजी ऐसा कह रहे थे तब ताई ने नलिनी को उनके चरणों पर डाल दिया। उस पर सतगुरुजी वापस अपने स्थान लौट गए; ताई के मन का ढाढ़स बढ़ गया। इतने में नलिनी उठ बैठी और उसे देखकर नलिनी की माँ अत्यंत हर्षित हुई। इस प्रकार सतगुरुनाथजी भक्तों की सहायता के लिए हमेशा सतर्क रहते हैं तथा भक्तों के सुख से वे सुखी होते हैं; क्योंकि वे समझते हैं की भक्त उनसे भिन्न नहीं हैं। उस वर्ष कार्तिक महीने के शुक्लपक्ष के चतुर्थी के दिन ताईबाई से मिलने हुबली के भक्तगण मुंबई पधारे। ताई ने सभी की उत्तम आवभगत की और उनसे सतगुरुजी का क्षेमकुशल सुनकर वह आनंदित हो गयी। परस्पर बातचीत करते समय सतगुरुजी का गुणगान करने के कारण सभी के मन में सतगुरुजी के प्रति आत्मीयता भरा प्रेम भाव उमड़ने लगा और ताईबाई देहभान भूल गयी। एक क्षण में उसके सामने सिद्धसतगुरुजी साक्षात खड़े हुए थे। उन्होंने उसे देखकर अपने पास बुलाने के कारण वह उनके पास गयी। उसने मुख से केवल "सिद्धारूढ़ महाराज" शब्दों का उच्चारण करके उनके चरणों में सिर रखा, उसी पल सभी के सामने एक महत् आश्चर्य की घटना घटी| एक क्षण चारो ओर एक दिव्य प्रभा फैल गयी मानो बिजली कौंध गयी हो; सभी की आँखें चकाचौंध हो गयी। उस दिव्य प्रभा से आच्छादित ताई किसी को भी दिखाई नहीं दी, अगले पल ही वह प्रभा ढल गयी और एक अचरज हुआ; उन्होंने देखा तो ताईबाई के प्राण निकल गये थे। सतगुरु सिद्धनाथजी के चरणों में ताई ने अपना देह त्याग दिया था; उसका निर्जीव शरीर देखकर उसके घर के सदस्य

शोकसागर में डूब गये। देहत्याग का समय आने पर, भक्त के शरीर तथा मन के सारे दुख दूर करके सतगुरुजी उसे अपने चरणों में शरण देते हैं, जहाँ से उसे फिर से इस मृत्युलोक आना नहीं पड़ता।

अब इस कथा का लक्ष्यार्थ सुनिए। ताईबाई को सद्भक्ति समझें। दैवयोग से उसे साधु के रूप में सतगुरुजी मिले| भावभक्ति से वह उस साधु की शरण में जाने के कारण उसने उसे सिद्धारूढ़जी के स्वरूप का विवरण दिया। उस समय भक्ति को सपने में ही तुर्या स्थिति प्राप्त हो गयी; जिसके कारण उसे स्वरूप का ज्ञान हुआ। अल्प सा आत्मरूप देखने के कारण उसका मन स्वरूप के ज्ञान के प्रति उत्कंठित हो उठा; वह स्वरूप ज्ञान पूर्ण रूप से प्राप्त हो इसलिए उसने सतगुरुजी से प्रार्थना की। उस समय निश्चल मन सतगुरु भक्ति को अपने साथ लेकर रेलगाड़ी से आत्माकार रूपी हुबली के लिए निकल पड़ा। मन की सभी वृत्तियाँ आत्माकार होने के कारण स्वयंप्रकाशित आत्मा प्रकट हो गयी और उसने सतगुरु भक्ति को आनंद रूपी प्रांत में बसाया। ऐसे सतगुरुजी पर जो मुमुक्षु भाव भक्ति से ध्यान लगाता है, उसके हृदय में वे प्रकट होकर उसे ज्ञान प्रदान करते हैं। अब दूसरी कहानी का तात्पर्य सुनिए। नलिनी को निर्मल शांति समझें; उसे विषयवासना का ज्वर आकर उसके प्राण गए। उस समय सतगुरुजी दौड़ते हुए आए और उन्होंने कृपा करके आत्मानंद की बौछार की, जिससे विषयवासना नष्ट होकर शांति तथा स्वरूप ज्ञान जग गए। सिद्धसतगुरुजी को प्रणाम करने से सारे दुख दूर होकर आत्मानंद प्रकट होता है, जिससे भवभय का निरसन होता है। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह उनतालीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥